मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

BHDC–132

कला स्नातक (सामान्य)

(बी. ए. जी.)

(सी. बी. सी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

बी.एच.डी.सी.–132 : मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे | *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम *प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***चार*** *के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** की संदर्भसहित व्याख्या कीजिए : 20

(क) पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।

कहिबै को सोभा नहीं, देखें ही परवांन॥

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ख) अविगत गति कछु कहत न आवै।

ज्यौं गूँगै मीठे फल को रस अन्तरगत हीं भावै।

परम स्वाद सबहीं तु निरंतर, अमित तोश उपजावै।

मन–बानी कौं अगम–अगोचर, सो जानै जो पावै।

रूप–रेख–गुन–जाति जुगति–बिनु निरालंब कित धावै।

सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर सगुन

लीला–पद–गावै।

(ग) घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ,

जिहि भांतिन हौं दुःख–सूल सहौं।

नहिं आवनि औधि न रांवरी आस,

इतै पर एक–सी बाट चहौं।

यह देखि अकारन मेरी दसा,

कोउ बूझै तो ऊपर कौन कहौं।

जिय नेकु विचारि के देहु बताय,

हहा पिय दूरितें पांय गहौं।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

2. भक्तिकाव्य के शिल्प विधान पर प्रकाश डालिए। 20

3. रीतिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 20

4. संत कवि रविदास की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए। 20

5. तुलसीदास की कविता के भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए। 20

6. नीतिकाव्य परंपरा में रहीम का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 20

7. सूफ़ी कवि जायसी की रचनाओं का परिचय प्रस्तुत कीजिए। 20

8. बिहारी की काव्य-भाषा का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 20

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×10=20

(क) कबीर की भक्ति

(ख) सूरदास का जीवन-वृत्त

(ग) रीतिबद्ध काव्य

(घ) भूषण की काव्य-भाषा

× × × × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com